B.N. College, Bhagalpur

A Constituent unit of Tilka Manjhi Bhagalpur University

Department of History

Topic : Non-Cooperation Movement (PPT)

B.A. Part-3

Prepared by : Sri Pinku kumar

Asst. Professor (Dept. of History)

B.N. College Bhagalpur

Contact (whatsApp) no- 7982166260

Email id- kpinku348@gmail.com

असहयोग आंदोलन

परिस्थितियां तथा कारण

❖असहयोग आंदोलन की शुरुआत को एक ओर खिलाफत के मंच से, तो दूसरी ओर सन 1920 ई. के पहले के राजनीतिक घटनाक्रम के प्रकाश में देखे जाने की आवश्यकता है। खिलाफत का मुद्दा मुसलमानों के साथ एकता स्थापित करने का एक अवसर था। गांधीजी ने इसमें अपनी रुचि दिखायी और अंतर्मन से इसके साथ जुड़े।

❖असहयोग आंदोलन को गांधी जी ने खिलाफत के मंच से शुरू किया और इसके बाद इसको सक्रिय रूप देने,और अधिक संगठित तथा मजबूत बनाने के लिए इसे कांग्रेस के मंच से भी शुरू किया।

❖दूसरी तरफ कांग्रेस ने अंग्रेजों के संवैधानिक विकास का विरोध किया। सन 1919 ई.का अधिनियम बहुत कम लोगों को संतुष्ट कर पाया। हंटर समिति की रिपोर्ट का कोई साकारात्मक परिणाम नहीं निकला। बहुत सारे घटनाक्रमों जैसे- रोलेट अधिनियम का पास होना, जलियांवाला बाग हत्याकांड, पंजाब में मार्शल कानून आदि ने स्थिति को और अधिक विस्फोटक बना दिया।

❖प्रथम विश्व युद्ध से उत्पन्न आर्थिक संकट ने लोगों की असंतुष्टता को और अधिक बढ़ाया। कीमतों में वृद्धि, भोजन की कमी आदि ने निम्न स्तर के लोगों पर बुरा प्रभाव डाला।

परिस्थितियां तथा कारण-1

- इस प्रकार सन 1920 ई. में भारत एक राजनीतिक उबाल की स्थिति में था क्योंकि लोगों की असंतुष्टता चरमोत्कर्ष पर था। साम्राज्यवाद के खिलाफ परिस्थिति बन रही थी और लोगों को कार्रवाई करने के लिए बाध्य कर रही थी। विस्फोटक राजनीतिक स्थिति की अंतिम परिणिति असहयोग आंदोलन के रूप में प्रकट हुआ।

असहयोग आंदोलन के कार्यक्रम

- उपाधियों, सम्मानों का समर्पण और स्थानीय निकायों में नामजद सदस्यों का इस्तीफा। सरकारी एवं गैर सरकारी समारोहों का बहिष्कार।
- विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार तथा विधान पालिकाओं का बहिष्कार।
- सरकारी विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं न्यायालयों का बहिष्कार।
- मेसोपोटामिया में सेना कर्मचारियों, मजदूरों की भर्ती का बहिष्कार।
- विधान परिषद का उम्मीदवारों द्वारा और चुनाव का मतदाताओं के द्वारा बहिष्कार।
- राष्ट्रीय विद्यालयों एवं महाविद्यालयों की स्थापना।

रचनात्मक कार्यक्रम के मुख्य तत्व

- स्वदेशी को प्रोन्नत करना।
- हिंदू मुस्लिम एकता को प्रोन्नत करना।
- हथकरघा और बुनाई को बढ़ावा देना।
- छुआछूत को मिटाना।
- नशीले पेय पदार्थों पर प्रतिबंध।
- सदव्यवहार तथा सदविचारों को उत्पन्न करना।
- राष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना।
- एक करोड़ रूपए के तिलक कोष की स्थापना।

गांधीजी का प्रस्ताव दो बुराइयों को सुधारने के लिए किया गया था-

- खिलाफत के प्रश्न पर भारत के मुसलमानों के प्रति अपनी जिम्मेदारी पूरा ना करने में सरकार की असफलता।
- पंजाब के निर्दोष लोगों की रक्षा तथा दोषी अधिकारियों को दंडित करने में दोनों सरकारों का असफल होना। खिलाफत के मुद्दे को इसमें प्रधानता दी गयी।

विश्लेषण

- संघर्ष के दौरान ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विधानपालिकाओं, न्यायालयों, शैक्षणिक संस्थानों के बहिष्कार को प्रमुख हथियार के रूप में अपनाया गया। जैसे ही कांग्रेस उम्मीदवारों ने चुनाव में भाग लेने से इनकार किया, गैर कांग्रेसियों ने 1919 के अधिनियम के तहत गठित की गई नई परिषदों पर कब्जा कर लिया।
- कांग्रेस इतनी सक्षम नहीं थी कि वह मतदाताओं को मत ना डालने से रोक सके। फलतः परिषद कार्यरत रहे और संवैधानिक तंत्र भी विफल नहीं हुआ लेकिन इस तर्क को भी दिया जा सकता है कि वे पूर्णरूपेण प्रतिनिधि निकाय नहीं थे।
- वकीलों द्वारा न्यायालयों का पूर्ण बहिष्कार नहीं किया गया, इसके बावजूद की मोतीलाल नेहरू एवं चितरंजन दास ने इसका उदाहरण प्रस्तुत किया। सरकारी दफ्तरों से पदों को छोड़ना और त्यागपत्र देना नगण्य मात्र था।
- प्रिंस ऑफ वेल्स के लिए नए विधान परिषदों के उद्घाटन के संबंध में राजकीय आगमन (1920) का बहिष्कार सफल रहा लेकिन इसका राजनीतिक लाभ काफी कम था। विद्यालयों एवं महाविद्यालयों का बहिष्कार भी पूरे तौर पर सफल नहीं रहा। गांधी जी को इस बात का दुख था कि देश के विभिन्न हिस्सों में लोग अहिंसक बनी रहने में असफल रहे।

आंदोलन का स्थगन

- चौरी-चौरा की हिंसक घटना के पश्चात गांधी जी ने असहयोग आंदोलन स्थगित कर दिया। इस आंदोलन के आकस्मिक स्थगन ने सभी लोगों और नेताओं को स्तब्ध कर दिया। गांधी जी द्वारा लिए गए निर्णय के पीछे निम्न कारक उत्तरदाई थे-
- असहयोग आंदोलन, गांधीजी की अहिंसात्मक प्रवृत्ति पर आधारित था। परंतु चौरी-चौरा की इस हिंसात्मक घटना ने उनको इस प्रवृत्ति का प्रतिकार किया। इस घटना ने यह सिद्ध किया कि लोगों को अभी भी सत्याग्रह की कला को सीखना है,जो कि इस आंदोलन की प्रमुख शक्ति था।
- गांधीजी अहिंसावादी सिद्धांतों के कट्टर समर्थक थे। गांधीजी ने अहिंसावादी प्रवृत्ति को अपने सिद्धांतों के रूप में अपनाया और वह इस सिद्धांत को जन आंदोलन में समाविष्ट करना चाहते थे। यह गांधीजी के सिद्धांतों की राजनीतिक और नैतिक अवधारणा थी। हिंसक माध्यमों से स्वराज्य की प्राप्ति उन्हें स्वीकृत नहीं थी।

आंदोलन का स्थगन-1

- गांधीजी ने इस बात को दोहराया कि जब वह बारदोली में सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत करेंगे तब भी देश के किसी हिस्से में किसी हिंसक जन आंदोलन की शुरुआत नहीं चाहेंगे, क्योंकि जन आंदोलन की शुरुआत हिंसक रूप धारण कर सकती थी।
- वह एक विशेष प्रकार के नियंत्रित जन आंदोलन में विश्वास रखते थे जो किसी भी प्रकार से सामाजिक क्रांति का रूप नहीं था। उनके अनुसार हिंसा,अंग्रेजों को इस आंदोलन के प्रति शत्रुतापूर्ण रुख अपनाने में एवं इसको दबाने में बहाने का कार्य करती, इसे अतिरिक्त हिंसक आंदोलन के द्वारा शाही सेनाओं के ऊपर विजय प्राप्त करना असंभव था।

निष्कर्ष :

- ऐसा भी प्रतीत होता है कि गांधीजी लोगों की बलिदान की सीमाओं से अवगत थे और उनकी यह व्यवहारिक राजनीतिक सोच थी कि आंदोलन की शक्ति एवं प्रभाव दिनों-दिन कम हो रहा था। लंबे समय तक चलने वाले इस आंदोलन में लोगों के बलिदान की भावना व सहनशीलता की सीमाओं से गांधीजी भलीभांति से अवगत थे। आंदोलन का वापिस लिया जाना एक प्रकार से आंतरिक कमजोरियों को उभरने से रोकने का प्रयास था। ऐसा प्रतीत होता है कि गांधीजी एक विस्तृत जन आंदोलन के दौरान लोगों के मनोबल को टूटने से बचाना चाहते थे।